M.F.A - 2nd semester

PHILOSOPHY OF ART (WESTERN AND INDIAN)

CODE - T-2001

UNIT - III

PLATO

प्लेटो का परिचय :- प्लेटो यूनान का महान दार्शनिक था। प्लेटो को अफलातून नाम से भी जाना जाता है। प्लेटो के शुरुआती जीवन के बारे मे ज्यादा जानकारी नही मिलाती है प्लेटो के बचपन के दिनो मे उन्होने क्या किया इस बारे मे किसी को भी पूर्णरुप से जानकारी नहीं है। हाँ फिर भी प्लेटो के बारे मे लोग अटकले जरूर लगाते है। उनके द्वारा लिखी गयी किताबों व इतिहासकारों के मुताबिक प्लेटो का जन्म एथेंस मे हुआ था। उनका जीवन काल 427 - 347 ई.पू. हुआ था। उनके पिता 'अरिस्टोन' तथा भाता 'पेरिक्टोन' इतिहास प्रसिद्ध कुलीन नागरिक थे। प्लेटो सुकरात का शिष्य था। तथा सुकरात के जीवन के अंतिम क्षणों तक उनका शिष्य बना रहा। सुकरात की मृत्यु के बाद प्रजातंत्र के प्रति प्लेटो को घृणा हो गयी। प्लेटो ने पूर्वती सभी दार्शनिकों के विचार का अध्यन कर सभी मे से उत्तम विचारों का पर्याप्त संचय किया। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। पश्चात्य सौन्दर्य - शास्त्र मे प्लेटो के विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अपने संवादो में प्लेटो ने कला और सौन्दर्य के संबंध मे भिन्न-भिन्न विचार व्यक्त किए हैं। और उनके उपवाद भी दिये हैं। प्लेटो ने सौन्दर्य पर प्रथक ग्रंथ नही लिखा। अपनी रचनाओं मे कही - कही सौन्दर्य कला के विषय मे प्रसंगवश उल्लेख किया है। अपनी उच्च आदर्शवादी विचार धारा के लिये प्लेटो विश्वविख्यात हैं।

Scanned with CamScanner

प्लेटो की प्रसिद्ध रचनाएं :- दि रिपब्लिक, सिम्पोजिसम, फैयड्रस, दि लॉज, पाईथागोरस

प्लेटो के अनुसार :- "कला सत्य की अनुकृति है कला में हम ईश्वर द्वारा निर्मित सृष्टि को ही सत्यापित करते हैं।"

प्लेटो - "परम सौन्दर्य"

प्लेटो का दर्शन आदर्शवाद या Idealism कहलाता है, जिसमे उच्च नैतिक मूल्यों की अधिकता है। परम सौन्दर्य क्या है? इसकी परिभाषा प्लेटो ने अपने ग्रन्थ पाईथागोरस मे दी है? इन्द्रियातीत आध्यात्मिक तत्व जिसकी अभिव्यक्ति (अनुभूति) मास्तिष्क मे ध्यान मग्न अवस्था मे होती है।

प्लेटो परम पिता परमेश्वर को असीम सौन्दर्यवान मानते हैं सौन्दर्य, सत्य और अच्छाई उसी परमेश्वर से उपजते हैं। प्लेटो ने सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के योग मे ही सौन्दर्य को देखा। संसार की सारी वस्तुएँ सुन्दर हैं क्योंकि वे ईश्वर का प्रतिबिम्ब हैं।

प्लेटो के अनुसार विचार या प्रत्यय स्थायी तत्व हैं 'प्रत्यय' एक प्रतिनिधि या चिन्ह हैं। इसी प्रकार कहा जा सकता है कि संसार की सारी सुन्दर वस्तुएँ या वित सौन्दर्य नही हैं, वे सही "सौन्दर्य" प्रत्यय की छवियाँ हैं।

भगवान श्री कृष्ण ने गीता मे कहा है - "संसार की सभी सुन्दरता मुझ मे है संसार की सभी सुंदर वस्तुएँ जो सभी आकर्षित है उन सभी का मूल स्त्रोत मे ही हूँ। इस प्रकार संसार की सारी वस्तुएँ सुन्दर नही है वे केवल सौन्दर्य की प्रतिबिम्ब व दर्पण मात्र हैं।

Scanned with CamScanner